I

Lecture Series No:- 46.

online class
Date- [illegible]
Day- [illegible]
Time 10:20 to 10:50 A.M

TOPIC,

(1) Secondary

Dr. Sunita Kumari
Depart. of Philosophy,
B.A part - I
paper - II (H)
A.N.D. College Shahpur patory,
Samastipur,

Ans:-

John Locke का विश्व दर्शन अनुभववादी होते हुए भी बहुत कुछ Descartes के दर्शन से मिलता-जुलता है। इनके अनुसार जगत की रचना द्रव्यों से हुई जो कि शक्तियों गुणों और क्रियाओं के आधार है। ये द्रव्य दो प्रकार के हैं। शरीर और आत्मा। ज्ञान के सिद्धांत में Locke ने यह बतलाया है कि हमारे मूल सरल प्रत्यय है (कि) एक इन्द्रिय अथवा अनेक इन्द्रियों के द्वारा बाह्य जगत से प्राप्त, ठोसपन इत्यादि। एक से अधिक इन्द्रियों से प्राप्त होने वाले प्रत्यय है प्रसार आकार और गति। ये दोनों प्रकार के प्रत्यय बाहर से आते हैं।

P.T.O

इस प्रकार मनुष्य के बाहर इनका कोई न कोई आधार आवश्य होना चाहिए। इस प्रकार इन सरल प्रत्ययों के आधार पर Locke जड़ की स्थापना करते हैं।

Locke ने जड़तत्व का पुद्‌गलों में दो प्रकार के (गुणों) गुण बतलाये हैं :→

(i) प्राथमिक गुण और (2) गौणगुण प्राथमिक गुण भौतिक पदार्थ में हैं इनकी संख्या छः हैं :→ ठोसपन, विस्तार, आकार, गति, विश्राम या स्थिति और संख्या। प्रधान गुण वस्तुनिष्ठ है। गौण गुण प्राथमिक गुणों के कारण ही हमसे उत्पन्न होते हैं ~~फिर चूंकि~~ Locke प्रतिरूपात्मक सिद्धान्त (Coppy) यानी (copy theory) को असाधारण रीति से मानते हैं ~~फिर चूंकि~~ Locke इसलिए ~~इसके~~ अनुसार प्राथमिक गुणों की सही सही नकल ~~प्रत~~ etc.!!

END